Peer Reviewed Journal

ISSN 2278 - 4284

LOKNAYAK

Interdisciplinary Journal For Innovative Research & Evaluation

VOLUME - XX
DEC. - 2016

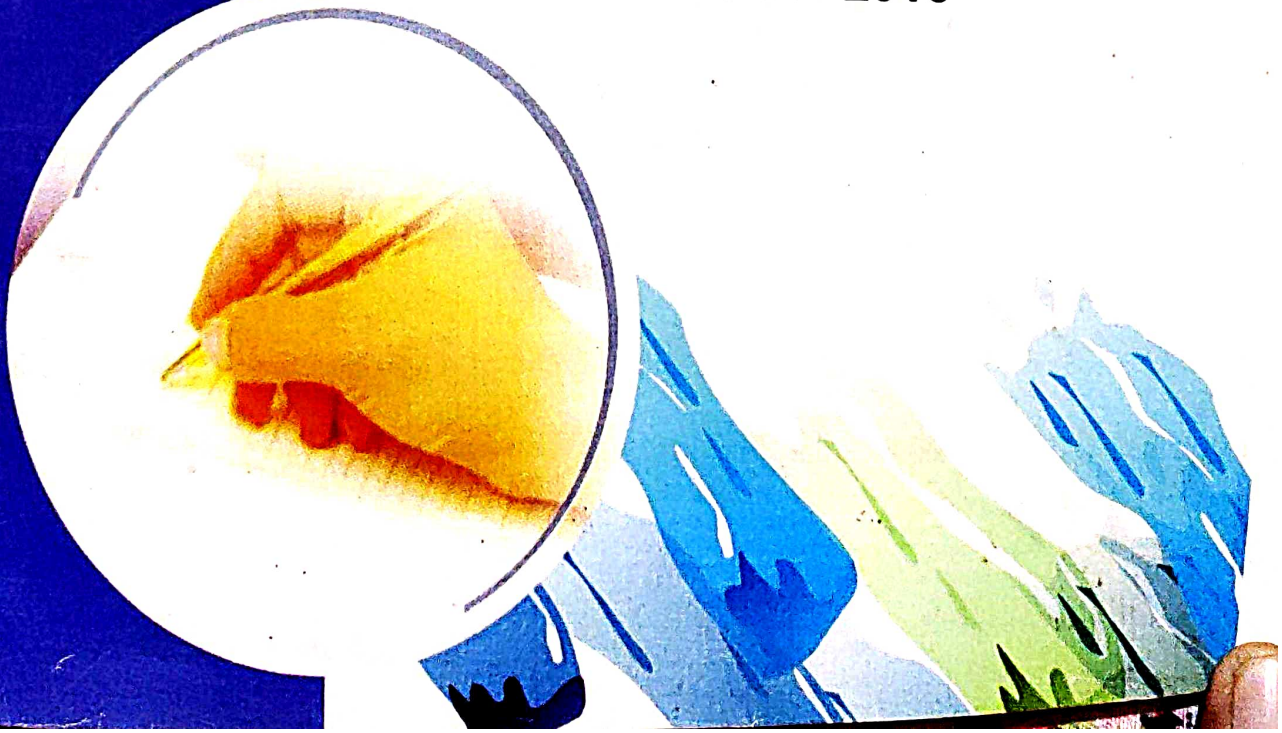

INDEX

Sr.No.	Subject	Author	Page N
1)	**A Comparative Study of Selected Motor Ability Between Hockey and Football Players**	**Dr. Uday N. Manjre**	1-6
2)	Effect of Isotonic and Isometric Training on the performance of cricket players In Yavatmal City	Prof. Amol O. Deshmukh	6-12
3)	Comparison of Competitive Anxiety of Hockey Players and Individual Swimmers	Prof. Dr. Subhash Donge	13-1(
4)	Sports Leadership and Management in Sport	Dr. Suhas R. Tiwalkar	16-1(
5)	New Trends In Commerce Education	P. Mallu	19-2
6)	Comparative Study of Selected Physiological Variables of Post Graduate Students	Prof. D.V. Phadnis	22-2
7)	इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना	प्रो. डॉ. शंकर बुंदेले	27-3
8)	भीष्म साहनी के उपन्यास साहित्य में अभिव्यक्त शामाजिक चेतना	डॉ. श्यामप्रकाश आ. पांडे	32-3
9)	भारतीय समीक्षा- एक विवेचन	प्रा. यु. बी. देशमुख	39-4
10)	वर्तमान बारत में गांधीजी के शिक्षा संबंधी विचार	प्रा. डॉ. रवींद्रकुमार शिरसाट	42-4
11)	जनसंचार माध्यमों की चुनौतियाँ एवं उत्तरदायित्व	प्रा. डॉ. संतोष येरावार	47-5
12)	प्रयोजनमूलक भाषा एवं कार्यालयीन क्षेत्र में अनुवाद की समस्याएँ एवं समाधान	चंदन विश्वकर्मा	50-5

जनसंचार माध्यामों की चुनौतियाँ एवं उत्तरदायित्व

प्रा.डॉ.संतोष येरावार
देगलूर महाविद्यालय देगलूर

जनसंचार यह शब्द ॲंग्रेजी के Mass Communication का हिंदी रुप है लॅटीन के Communico की उत्पत्ति मानी जाती है । अर्थ जिसका विषय या वस्तु की सबके लिए साझेदारी शब्द से Communication इस शब्द के साथ घ्चरङ इस धातू से बने शब्द का अर्थ है चलना, संचरण करना इस संदर्भ में सुचना तथा संदेशो का एक-दुसरे व्यक्ति के बीच आदान-प्रदान करना

आज के युग को जनसंचार का युग कहा जाता है आज विभिन्न माध्यमोंद्वारा लागों को सुचनाएँ दी जाती है जनसंचार का महत्व व्यक्ति जीवन में बढता जा रहा है संचार एक व्यक्तिसे दुसरे व्यक्ति को जोडने का महत्वपुर्ण कार्य करता है आज भले ही जनसंचार यह शब्द नया लगता हो लेकिन इसकी अवधारणा पुराणी हैं संचार आज मनुष्य जीवन का एक महत्वपुर्ण अंग बन चुका है जनसंचार का उद्देश किसी भी जानकारी को तमाम लोगों तक पहुँचाना है, जो इससे संबध रखते हो यही कारण है कि आज मनुष्य जितासू बनता जा रहा है प्राचीन काल सें जनसंचार का कार्य जारी है मनुष्य ने इसके लिए कई सारे मध्यमों का उपयोग किया है जिसे दो भागों में विभाजित किया गया है

१) परंपरागत जनसंचार माध्यम :

परंपरागत जनसंचार माध्यमों में व्यक्ति की सामान्य अनुभुति,भावना तथा विचारों को अभिव्यक्त किया जाता हैं इसके कई सारे रुप देखने को मिलते है जैसे लोकगीत,लोककथा,लोकनृत्य, लोकनाटय, लोककला, आदि

२) आधुनिक जनसंचार माध्यम :

आधुनिक जनसंचार माध्यमों मे प्रमुखतः तीन प्रकार

१) मुद्रित माध्यम - इसके अंतर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएँ है, मुद्रित साहितये, जर्नल, पोस्टर,पॉम्पलेट आदि

२) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम-इसके अंतर्गत-काव्य माध्यम जैसे- रेडिओ, ऑडिओ कॅसेट आदि
श्रव्य एवं दृश्य माध्यम-जैसे-फिल्म, टेलीविजन, वीडिओ, कॅसेट आदि

३) नवइलेक्ट्रॉनिक माध्यम-इस के अंतर्गत -उपग्रह, कॉम्प्युटर प्रणाली इंटरनेट, मल्टीमीडिया, फॅक्स, फोन आदि

उपयुक्त दोनों प्रकार के माध्यमों में परंपरागत माध्यमों का महत्व आज कम हो रहा है जिसका पमुख कारण प्रभावी आधुनिक माध्यमे है मनुष्य हमेशा अपना तान विकसित करता गया है अपने जीवन को वह आरामदायक बनाने के लिए कई सारे साधनों को तलाशता रहा हैं इसलिए माध्यमों में भी तेजी से परिवर्तन हो रहा है. आज तकनीकी युग के साथ-साथ बलदाव आया और पुरावे माध्यम पीछें छोडता हुआ वह आधुनिक जनसंचार माध्यमों तक आया आज इन माध्यमों ने विश्व में नई क्रांति की हैं अनेक विध माध्यमोंद्वारा मनुष्य विश्व से जुडा हैं जीवन मे बहुत तेजगति से जनसंचार माध्यमों के कारण बंदलाव आ रहा है । लेकिन ऐसा जनसंचार करते हुए इन बदलाव के साथ-साथ उसके सामने उतनी ही नई चुनौतियों भी है दुरसंचार माध्यमो का विकास जिसनी द्रुत गति से पिछले दो दशकों में हुआ है वह किसी को भी हैरत में डालनेवाला है

जनसंचार माध्यमों की चुनौतियाँ :

आधुनिक युग में जनसंचार माध्यमों मे क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है इस युग को संचार युग कहा जाने लगा है मनुष्य के जीववन में सुचनाओ का महत्त्व आतयेाधिक चढ रहा है यह सुचनाएँ जनसंचार के विविध माध्यामोंद्वारा मिल जाती है इतनाही नही इस के द्वारा मिलनेवाली जानकारी यथावत ग्रहण करने के अलावा उसके-पास कोई उपाय नही है आज जनसंचार माध्यम व्यवसायिक बनते जा रहै है इसकी संख्या दिनो-दिन बढती जा रही है ग्राहक को यथार्थ जानकारी तथा सुचनओं से अवगत कराने की चुनेातियाँ उसके सामने है इन माध्यमों को बडा बनाने में वितान तथा प्रौद्योगिकी का भी बहुत बडा हाथ है इसलिए इसके विकास की एक बडी चुनौति नजर आती है

इस क्षेत्र में कम्प्युटर के आने के कारण कई सारे काम अतयेंत तीव्र गति से होने में सहाय्ता हो रही है सुचना प्रौद्योगिकी के बढते महत्व को देखकर सरकार ने इसे उद्योग का दर्जा दिया हैं इतना ही नही तो इसके लिए कई सारे नये सॉफवेअर की निर्मिती की गई है इसका प्रभाव मीडिया पर भी पडा हैं आज कई सारी सुचनाएँ, तथा जानकारी तुरंत देने मे सहाय्यता हो रही है इसमें इतनी तेजी आयी है कि, पलक झपकते ही विश्व की जानकारी पहुँच जाती है मूद्रित माध्यम हो चाहे दृश्य-श्राव्य माध्यम हो इसमे सुलभता आयी है मुद्रित माध्यम और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम एक - दुसरे में समाहीत हो चुके है । इस युग ने संभी जन - मानस को प्रभावित किया वे जिसेस वह माध्यामों में. जकड चुका है । इसके कारण हर-जगह सुचना तथा नई जानकारी का विस्फोट हो रहा है । इसलिए इसे शक्ति है, वितान विशिष्ट शक्ति और प्रोद्योगिकी महाशक्ति ऐसा कहा गया है इस तान को बनाये रंखने की चुनौति आज जनसंचार माध्यमों के सामने हैं

जनसंचार माध्यम और प्रोद्योगिकी का विकास होना समस्त मानव सभ्यता के लिए एक बहुत बडी उपलब्धि और उतनीही बडी चुनौति भी जेसे-जैसे इसका विकास हो रहा है वैसे वेसे समय और दुरी सीमित होने लगी है इंटरनेट के कारण सारे विश्व का दर्शन हम एक जगह बैठकर कर सकते हैं इसलिए विश्व भी हमे एक गाँव की तरह लगता है लेकिन इसके बावजुद कुछ लागों के लिए यह खिलौना बना है तो कुछ लागों के लिए यह असम्भव भी है इसके कारण इन दोनों मे संचार की रिक्तता बढ रही हैं इन सबको अपनी बाढों में. समेटने की चुनोती है

आज मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक्स जनसंचार माध्यमो का विकास दिनो - दिन बढ रहा है साथ - ही साथ मानवी जीवन को इसने पुरी तरह से प्रभावित किया है भाषा साहितये तथा समाज में इसका महत्त्व बढ चुका है जनसंचार माध्यमों के सामने भाषा के साथ साथ-अनुवाद की भी चुनौति बढ रही है किसी एक भाषा के देश की कई सारी भाषाओ मे अनुवाद करना पडता है, जो एक चुनौति भरा कार्य है माध्यमों के सामने आज नई-नई समस्याएँ खडी हो रही है जिसके कारण माध्यमों पर भी कई सारे सवाल उठाये जाते है

जनसंचार माध्यमों मे वितापन का भी प्रभुत्व रह चुका है आज महत्वपुर्ण कार्यक्रमो मे भी विराम के रुप मे विज्ञापन दिए - जाते है समाचारो को कई बार खेलो के लिए हशिए पर रख जाता है लेकिन खेलों में भी विज्ञापन आता हैं जिसके कारण लोग उसे पसंद नही करते आज धन के लिए माध्यम यह करते है लेकिन इसके साथ जो लोग विश्वास से देखते है उनका विश्वास कायम रखने की, चुनौति जनसंचार माध्यमों के सामने है इसमे कई बार मजबुर होकर उसका स्वीकार करना पडता है आज जनसंचार माध्यमों के सामने विश्वास तथा सतये पर खरा उतरने की, बहुत कडी चुनैति है कानूनी, राजनीतिक, खेल, मनोरंजन, सुचना आदि विविध क्षेत्रो में चल रही गतिविधियो को विश्वसनियता के साथ प्रस्तुत करने की भी चुनौति बढ रही है

ISSN 2278-4284

जनसंचार माध्यमों का उत्तरदायित्व :

आज जनसंचार माध्यमों ने पुरे विश्व को प्रभावित किया है.उसी के साथ समाज बडी आस्था से उसकी और देख रहा है बहुम कुछ व्यक्ति आज उसी पर निर्भर भी है समाज के विविध क्षेत्रों में उसका उत्तरदायित्व बढ रहा हैं सामाजिक क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों का यह उत्तरदायत्वि है की, समाज मे चल रही विषमताओं को वह दूर करे समाज में चल रही विविध बुरी परंपराओ, कुरीतियों, अंधविश्वासो, ढोंग तथा अंडंबरो से सचित कर समाज को सही रास्ता दिखाए आज जनसंचारमाध्यम व्यवसाय प्रधान बनने के कारण अपने कर्तव्य से भटक रहे है, कई सारे ऐसे कार्यक्रमो का अंबार लगा रहे है जिसमें राजनेताओं मे भाषण, बाबा लागों के उपदेश,अंधश्रध्दा को बढावा देनेवाले विज्ञापन एक ही बात को बार-बार बतलाना इन सभी से बचकर अपना उत्तदायित्व निभाना होगा । जनसंचार माध्यम दर्पण की तरह विल्कुल साफ होना चाहिए । समाज की गतिविधियों का वास्तव हाल जन-मानस तक पहुँचाने का कार्य इन माध्यमो को करना होगा ताकि समाज उन्हे आत्मीयता से औविश्वास के साथ ग्रहण करे. ।

राजनीतिक उत्तरदायित्व की और जनसंचार माध्यमो को विशेष ध्यान देना होगा आज इस क्षेत्र में सबसे अधिक भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया है । माध्यम नें इसके कई सारे प्रमाण दिए भी है राजनीती को अगर भ्रष्टाचार से बचना है तो भाउकता कातयेाग करना होगा राजनीतिको निर्मल बनाने का बहुत बडा दायित्व जनसंचार माध्यामों पर है । हमारे नेता देश में क्या कर रहे हैं इसकी पुरी जानकारी संचार माध्यमो को जनता तक पहूँचानी होगी । लेकिन आम तौर पर देखा जाता है कि, नेताओ के ही इर्द - गिर्द सारे जनसंचार माध्यम घुमते है । नेताओं से बहुत बडी आय इन्हे मिलती है । किसी के भी दबाब मे न आकर उनका स्टिंग ऑपरेशन करना ही होगा"

आज हमारे देश को आर्थिक समस्याने जकडा है । बहुत बडी मात्रा में बेरोजगारी बढ रही है. आज की युवा पिढी भटक रही है । बेरोजगारी आतकवाद, दहशतवाद, गुंडागर्दी, डकैती, लूट-मार आदि की जड है । जनसंचार माध्यमों को अपनी औ उन्हे आकर्षित करना होगा । रोजगारों के सु अवसर संबंधि सही जानकारी उनतक पहूँचाकर उन्हे प्रेरित करना होगा और अपना उत्तरदायित्व निभाना होगा ।

हमारे देश के युवाओं पर बेरोजगारी का आक्रमण न हो इसलिए जनसंचार माध्यमों को अपना शैक्षिक दायित्व अच्छी तरह निभाना होगा । सभी लोग शिक्षित बने और राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग दे इसलिए विश्व शिक्षा संबंधी तथा व्यवसाय संबंधि गतिविधियों को अपने जरिए पहँचाना होगा । इस काम में आज संचार माध्यम अपनी भूमिका उतनी अच्छी तरह नही निभा रहे हैं व्यवसाय तथा नौकरीयों के अधिकाधिक सुअवसर प्राप्त हो ऐसी शिक्षा व्यवस्था को युवाओं तक पहूँचाने का दायित्व जनसंचार माध्यमों को निभाना होगा"

किसान तथा मजदूर वर्ग हमारे देश में बहूत अधिक है । कृषक को सही जानकारी भी देनी होगी । आज कई सारे किसान फसल न निकलनेके कारण आत्महतयेाएँ कर रहे है उनके जीवन मे आत्मविश्वास जागृत कराना जनसंचार माध्यम का महत्वपूर्ण दायित्व है । किसान बचा तो देश बचा सकता है । इसलिए उसे आधुनिक उपकरण तथा औषधियों के संदर्भ मे सही जानकारी देनी होगी । आम तौर पर कई सारे वितापन दिए जाते है जिसमे वह चुनाव नही कर पाता । इसलिए उसे सही दिशा बतलानी होगी"

आज जनसंचार माध्यमों का रुप विश्वव्यापी हो गया है । जनता की नजर हर समय जनसंचार माध्यमों पर टिकी होती है । इसका नेटवर्क दुनिया के हर कोने में पहूँच चुका है । कई सारी चुनौतियों का मुकाबला आज जनसंचार माध्यम कर रहे है । जनसंचार माध्यमों को एक मार्गदर्शक की भुमिका निभानी है । जनसंचार माध्यम आज हर व्यक्ति की निजी आवश्यकता बना है । इसी रुप को देखकर और अधिक

विकास करना है । केवल यथार्थवादी दृष्टिसेही मार्गक्रमन करना चाहिए । जन मनुष्य का विश्वस्त बनकर अपनी भूमिका निभनी है । समाज के प्रतयेक क्षेत्र, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षेणिक, राजनितीक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रो की जो भी चुनौतियाँ है उसका मुकाबला करते हुए अपना उत्तरदायिन पूरा करना है । इनका उद्देश केवल उद्योग तथा व्यवसाय नही होना चाहिए समाज का नवनिर्माण करने का उत्तरदायित्व भी जनसंचार माध्यमो का है । केवल धन के पीछे न भागकर अपने उत्तरदायित्व का ही अधिक से अधिक विचार जनसंचार माध्यमों को करना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सुची

१) पत्रकारिता एवं जनसंचार माध्यम - डॉ.जाधव, डॉ.मुनेश्वर, डॉ.शुक्ला , डॉ.पत्की

२) प्रयोजनमुलक हिन्दी - डॉ.लञ्मीकांत पांडेय, डॉ.प्रमिला अवस्थी

३) प्रयोजनमुलक हिन्दी अधुनातमक आयाम - डॉ.अम्बादास देशमुख

४) प्रयोजनमुलक हिंन्दी - डॉ.दक्षा निमावत

****

प्रयोजनमूलक भाषा एवं कार्यालयी क्षेत्र में अनुवाद की समस्याएं एवं समाधान

चंदन विश्वकर्मा

प्रयोजनमूलक भाषा से अभिप्राय 'प्रयोजन' या 'निष्प्रयोजन' के विपरीतीर्थ में नहीं, वरन् वह भाषा के व्यावहारिक पक्षे को उजागर करने के लिए प्रयुक्त भाषायी रूप है। यह भाषायी रूप सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा कने के लिए विशेष रूप से प्रयुक्त होता है और इसका प्रयोजनमूलक विशेषण इसके व्यावहारिक और कामकाजी पक्षे को अधिक स्पष्ट करता है। भाषा के प्रयोजनमूलक रूप को अंग्रेजी में 'फंक्शनल लेंग्वेज' (Functional Language) या 'लेंग्वेज फ़ार स्पेसिफिक पर्पज़'(Language for specific purpose) कहते हैं, जिसमें विभिन्न प्रकायो। या प्रयोगजनों के लिए प्रयुक्त-भाषा का अर्थ निहित है। हिंदी के संदर्भ कुछ विद्वानों ने 'प्रयोजनमूलक हिंदी'की अपेक्षा 'व्यांवहारिक हिंदी' या 'कामकाजी हिंदी' शब्द का प्रयोग इसलिए भी हो रहा है क्योंकि कुछ विद्वानों को प्रयोजनमूलक हिंदी से यह लगता है कि कोई ऐसी हिंदी भी है, जिसे 'निष्पयोजनपरक' कहा जा सकता है। इस संदर्भ में कुछ विद्वानों ने 'प्रयोजनमूलक' विशेषण को ही अर्थगर्भित और उचित प्रतिपादित किया है। डॉ. नगेंद्र(१९८७) का कथन है कि "वस्तुतः प्रयोजनमूलक हिंदी के विपरित अगर कोई हिंदी है तो वह निष्प्रयोजनमूलक नहीं वरन् आनंदमूलक हिंदी है। आनंद, व्यक्ति-सापेक्षे है और प्रयोजन,समाज-सापेक्षे। आनंद, यह स्वकेंद्रित होता है तथा प्रयोजन, समाज की ओर इशारा करता है। हम आनंदमूलक हिंदी के विरोधी हीं है, इसलिए आनंदमूलक साहित्य के हम भी हिमायती हैं। पर, सामाजिक आवश्यकताओं के संदर्भ में हम संप्रेषण के बुनियादी आधार को भी अपनी नज़र से ओझल नहीं करते चाहते।"[1] प्रयोजनमूलक विशेषण में निहित संकेत को स्पष्ट करते हुए और निष्प्रयोजन हिंदी की अवधारना को अस्वीकार करते हुए, डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा(१९८७) कहते हैं कि "निष्प्रयोजन हिंदी कोई चीज नहीं है लेकिन प्रयोजनमूलक विशेषण उसके व्यावहारिक पक्षे को अधिक उजागर करने के लिए प्रयुक्त किया गया है।"[2]

वास्तव में 'व्यावहारिक हिंदी' नामकरण से यह भ्रम निर्माण होता है कि व्यावहारिक हिंदी से अभिप्राय एक ऐसी हिंदी से है, जिसमें भाषिक एवं सामाजिक संदर्भ की अपेक्षा भाषा के व्यावहारिक संदर्भ पर